हिन्द स्वराज्य

Dr.Vini Sharma

स्वराज (गाँधी जी).

लंदन से दक्षिण अफ्रीका लौटते हुए गांधीजी ने रास्ते में जो संवाद लिखा और 'हिंद स्वराज' के नाम से छपाया.

दक्षिण अफ्रीका के भारतीय लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिए सतत लड़ते हुए गांधीजी 1909 में लंदन गए थे। वहाँ कई क्रांतिकारी स्वराज प्रेमी भारतीय नवयुवक उन्हें मिले। उससे गांधीजी की जो बातचीत हुई उसी का सार गांधीजी ने एक काल्पनिक संवाद में ग्रथित किया है। इस संवाद में गांधीजी के उस समय के महत्व के सब विचार आ जाते हैं। किताब के बारे में गांधीजी ने स्वयं कहा है

बच्चों के हाथ में भी यह दी जा सकती है। यह किताब द्वेषधर्म की जगह प्रेमधर्म सिखाती है; हिंसा की जगह आत्म-बलिदान को स्थापित करती है; और पशुबल के खिलाफ टक्कर लेने के लिए आत्मबल को खड़ा करती है।" गांधीजी इस निर्णय पर पहुँचे थे कि पश्चिम के देशों में, यूरोप-अमेरिका में जो आधुनिक सभ्यता जोर कर रही है, वह कल्याणकारी नहीं है, मनुष्यहित के लिए वह सत्यानाशकारी है। गांधीजी मानते थे कि भारत में और सारी-दुनिया में प्राचीन काल से जो

आदर्श को स्वीकार करें तो हमारा उद्धार नहीं होगा। हमें अपनी आत्मा को बचाना चाहिए। भारत के लिखे-पढ़े लोग पश्चिम के मोह में फँस गए हैं। जो लोग पश्चिम के असर तले नहीं आए हैं, वे भारत की धर्म-परायण नैतिक सभ्यता को मानते हैं। उनको अगर आत्मशक्ति का उपयोग करने का तरीका सिखाया जाए, सत्याग्रह का रास्ता बताया जाए, तो वे पश्चिमी राज्य-पद्धति का और उससे होने वाले अन्याय का मुकाबला कर सकेंगे तथा शस्त्रबल के

पश्चिम का शिक्षण और पश्चिम का विज्ञान अंग्रेजों के अधिकार के ज़ोर पर हमारे देश में आए। उनकी रेलें, उनकी चिकित्सा और रुग्णालय, उनके न्यायालय और उनकी न्यायदान-पद्धति आदि सब बातें अच्छी संस्कृति के लिए आवश्यक नहीं है, बल्कि विघातक ही हैं - वगैरा बातें बिना किसी संकोच के गांधीजी इस किताब में दी हैं।

मूल किताब गुजराती में लिखी गई थी। उसके हिंदुस्तान आते ही बंबई सरकार ने आक्षेपार्ह बताकर उसे जब्त किया। तब गांधीजी ने सोचा कि 'हिंद स्वराज' में मैंने जो कुछ लिखा है, वह जैसा का वैसा अपने अंग्रेजी जानने वाले मित्रों और टीकाकारों के सामने रखना चाहिए। उन्होंने स्वयं गुजराती 'हिंद स्वराज' का अंग्रेजी अनुवाद किया और उसे छपाया। उसे भी बंबई सरकार आक्षेपार्ह घोषित किया।

दक्षिण अफ्रीका का अपना सारा काम पूरा करके सन 1915 में गांधीजी भारत आए। उसके बाद सत्याग्रह करने का जब पहला मौका गांधीजी को मिला, तब उन्होंने बंबई सरकार के हुक्म के खिलाफ 'हिंद स्वराज' फिर से छपवाकर प्रकाशित किया। बंबई सरकार ने राज्य में, सारे भारत में और दुनिया के गंभीर विचारकों के बीच ध्यान से पढ़ी जाती है।

पाठक : तो आपने बंग-भंग को जागृति का कारण माना। उससे फैली हुई अशांति को ठीक समझा जाए या नहीं?

लेता है, इधर-उधर घूमता है और अशांत रहता है। उसे पूरा भान आने में कुछ वक्त लगता है। उसी तरह अगरचे बंग-भंग जागृति आई है, फिर भी बेहोशी नहीं गई है। अभी हम अंगड़ाई लेने की हालत में है। अभी अशांति की हालत है। जैसे नींद और जाग के बीच की हालत जरूरी मानी जानी चाहिए और इसलिए वह ठीक कही जाएगी, वैसे बंगाल में और उस कारण से हिंदुस्तान में जो अशांति फैली है वह भी ठीक है। अशांति है यह हम जानते हैं, इसलिए शांति का समय आने की शक्यता है। नींद से उठने के बाद हमेशा अंगड़ाई लेने की हालत में हम नहीं रहते, लेकिन देर-सबेर अपनी शक्ति के मुताबिक पूरे जागते ही हैं। इसी तरह इस अशांति में से हम जरूर छूटेंगे। अशांति किसी को

संपादक : अशांति असल में असंतोष है। उसे आजकल हम 'अनरेस्ट' कहते हैं। कांग्रेस के जमाने में वह 'डिस्कंटेंट' कहलाता था। मि. ह्यूम हमेशा कहते थे कि हिंदुस्तान में असंतोष फैलाने की जरूरत है। यह असंतोष बहुत उपयोगी चीज है। जब तक आदमी अपनी चालू हालत में खुश रहता है, तब तक उसमें से निकलने के लिए उसे समझाना मुश्किल है। इसलिए हर एक सुधार के पहले असंतोष होना ही चाहिए। चालू चीज से ऊब जाने पर ही उसे फेंक देने को मन करता है। ऐसा असंतोष हममें महान हिंदुस्तानियों की और अंग्रेजों की पुस्तकें पढ़कर पैदा हुआ है। उसे असंतोष से अशांति पैदा हुई; और उस अशांति में कई लोग मरे, कई बरबाद हुए, कई जेल गए, कई को देश निकाला हुआ। आगे भी ऐसा होगा; और होना चाहिए। ये सब लक्षण अच्छे माने जा सकते हैं। लेकिन इनका

हिंद स्वराज 20 पाठों में लिखी गई है.
हर एक पाठ उस चैप्टर के कंटेंट को दर्शाता है.

हिंद स्वराज भारत के हर एक युवा तथा हर एक नागरिक को आजादी व स्वतंत्रता के प्रति जागरूक करता है तथा उन में राष्ट्रीयता की भावना को भरता है.

बताया है कि बंगाल के बंटवारे के बारे में उन्होंने बताया कि बंगाल के बंटवारे से एक बहुत बड़ी दरार आ गई है जो नरम दल तथा गरम दल के बीच में बांट कर रख दिया है जो भारतीयों के लिए व भारत के आजादी के लिए खतरा है.

गांधीजी के तीसरे पाठ का संवाद हमने ऊपर चर्चा कर लिया है.

पाठ 4 में गांधी जी से यह पूछा जाता है कि स्वराज्य का अर्थ क्या है उसमें गांधीजी स्वराज का अर्थ खुलकर बताते हैं तथा वे उसे पूरा सही से ना बता कर वह बताते हैं कि स्वराज का मतलब यह है कि अंग्रेजों को ना बदलकर बल्कि हमें उनकी व्यवस्था को बदलना है.

5 में गांधीजी इंग्लैंड की दशा के बारे में बताते हैं वह बताते हैं कि इंग्लैंड की जो दशा है वह वहां की जो राजनीति है वह बहुत ही बेकार है उन्होंने एक ब्रिटिश पार्लियामेंट को वैश्या की तरह बताया है साथ ही यह बताया है कि लोग जो ब्रिटिश पार्लियामेंट में लोगों की सलाह के लिए कार्य करते हैं वह केवल अपना स्वार्थ देख रहे हैं इसके अलावा वहां की पार्लियामेंट्री लोगों के चीजों को पूरा कर पाने में असमर्थ है तथा जिस लक्ष्य से उसे बनाया गया है वे उसे नहीं पा पा रहे तथा उन्होंने बताया है कि प्रधानमंत्री तथा इसके अलावा वहां पर काफी लोगों को भ्रष्ट भी पाया गया है तो उन्होंने यह बताया कि इंग्लैंड की व्यवस्था काफी भ्रष्ट है.

इसके अलावा उन्होंने बताया कि इंग्लैंड से सिर्फ लेने वाली चीज या कॉपी करने वाली चीज एक ही है वह उनका देश प्रेम उसके अलावा हम के अंदर कोई गुण नहीं है केवल हमें उन्हें गुणों को उनसे प्राप्त करना चाहिए.

पाठ 6 में गांधीजी ने सभ्यता के बारे में बताया है.

गांधी जी ने आधुनिक सभ्यता के बारे में बताया है कि वह एक नशे की तरह है जो लोगों को आराम पहुंचा रही है तथा जो इसको प्राप्त कर रहा है वह कभी भी इसकी बुराइयों को नहीं सुनेगा.

उन्होंने बताया है कि ट्रांसपोर्ट तथा साधन जो इंसान को एक दूसरे से जोड़ रहे हैं तथा मशीनीकरण ने गंदगी को बहुत बढ़ाया है तथा इन्होंने गंदगी के अलावा मानव के जीवन को काफी खराब कर दिया है और लोगों को आधार मिक बना दिया है

है.

गांधी जी ने पाठ साथ में यह बताया है कि भारत को खोने का कारण केवल वह विचारक हैं जो अपने व्यापारिक फायदे के लिए उन्हें बसेरा दे रहे हैं तथा उन्हीं का एक कारण है कि आज वह हमारे देश में पूरे तरीके से अपने पैर फैला चुके हैं.

आर्थिक लालच भारत को खोने का सबसे बड़ा कारण है.

हिंद स्वराज का आठवां अध्याय जो अधर्म के ऊपर है वह बताते हैं कि आधुनिक सभ्यता अधर्म है क्योंकि वह मासूम जानवरों को मारने की इच्छा को बढ़ावा देता है वह अपने फायदे के लिए तथा नई तरह की दवाइयों को बनाने के लिए मासूम जानवरों को शिकार बनाते हैं.

हिंद स्वराज का आठवां अध्याय जो अधर्म के ऊपर है वह बताते हैं कि आधुनिक सभ्यता अधर्म है क्योंकि वह मासूम जानवरों को मारने की इच्छा को बढ़ावा देता है वह अपने फायदे के लिए तथा नई तरह की दवाइयों को बनाने के लिए मासूम जानवरों को शिकार बनाते हैं

हिंद स्वराज का नौवा अध्याय हमें छल के बारे में बताता है वह बताता है कि जिस तरीके से हमें पंडित वह कोई धार्मिक व्यक्ति ठगने की कोशिश करता है तो हमें पता चल जाता है परंतु नई सभ्यता व आधुनिक सभ्यता इस तरह की है कि अगर वह हमें ठगता भी है तो हमें पता नहीं चलता ताजा हमें इसके नुकसान के बारे में पता भी नहीं चल रहा है.

गांधीजी रेलवे के बारे में भी बताते हैं वह बताते हैं कि रेल जो काफी आसान व सुगम हमारे जीवन को बना दिया है परंतु यह इंसान को बहुत लालची बना रहा है, जैसे अनाज खोर अनाज को जमा कर लेते हैं बेचने के लिए तथा वह उसे उगाने वाले भूखे मर रहे होते हैं इसके अलावा उन्होंने बताया है कि रेलवे ने लोगों के पहले सामाजिक जीवन को खत्म कर दिया है इसके अलावा रेलवे कई सारी बीमारियां अपने साथ लेकर आई है जिसे प्लेग इत्यादि

10 वीं अध्याय में हिंदू-मुस्लिम के बारे में पूछा गया है जिसमें यह बताया गया है कि गांधीजी से पूछता है कि हिंदू और मुस्लिमों के बीच में हो रहे दुश्मनों का कारण क्या है उसमें गांधी जी ने बताया है कि गाय हमारी एक धार्मिक शक्ति है परंतु उस धर्म या उस गाय को बचाने के लिए हम अपने भाई को नहीं मार सकते उन्होंने बताया है कि यदि कोई गाय की हत्या कर रहा है तो हम उसके सामने विनम्र निवेदन कर कर बचा सकते हैं. साथ ही में उन्होंने बताया है कि दुनिया में कहीं भी कोई भी राष्ट्र या राष्ट्रीयता एक धर्म से नहीं बनी है राष्ट्रीय राष्ट्रीयता में सभी धर्म का होना अनिवार्य है

पाठ 11 में गांधी जी ने वकीलों के बारे में बताया है जिसमें उन्होंने बताया है कि वह अपने आपसी फायदे के लिए झगड़े को बढ़ाते रहते हैं हमारे देश के सभी वकीलों को झगड़ों को न्यायालय के बाहर निपटाना चाहिए ताकि हमारा कहीं ना कहीं पैसा बच सके इसके अलावा हम अंग्रेजी व्यवस्था को यह दिखा सके कि हम उन में विश्वास नहीं रखते.

गांधी जी ने पार्टी 12में डॉक्टरों के बारे में बताया है इसमें उन्होंने बताया है कि मासूम जानवरों को मारना तथा बाहरी दवाइयों का ज्यादा प्रयोग करना गलत है उसमें उन्होंने बताया है कि कंपनियां फायदा कमाने के लिए बहुत महंगी दवाइयां भेजती हैं तथा वह हमारे देश के लोगों को धोखा दे रही है.

पाठ 13 में सच्ची सभ्यता का अर्थ बताया गया है जिसमें गांधी जी ने यह बताया है कि सच्ची सभ्यता वह है जो मानव को मानव के कर्तव्यों को बताए तथा उन कर्तव्य पर चपन सके और कर्तव्य मौलिक होने चाहिए.

और हमारी सभ्यता पश्चिमी सभ्यता से काफी बढ़िया है पश्चिमी सभ्यता के लोगों को आराम दे रही है.

पाठ 14 में गांधी जी ने बताया है कि हम अपनी स्वतंत्रता तभी पा सकेंगे जब हम अपनी भारतीय सभ्यता को अपनाएंगे तथा आधुनिक सर्जित सभ्यता का बहिष्कार करेंगे.

पाठ 15 में गांधी जी ने बताया है कि हमें स्वतंत्रता पाने के लिए शांतिपूर्ण तथा अहिंसा को अपनाना चाहिए उन्होंने इटली का उदाहरण देकर बताया है.

लिए हमें अच्छे साधनों का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि अच्छे साधन हमें कभी भी बेकार अंत नाही देते है.

उन्होंने बताया है कि हथियारों से लड़ा हुआ युद्ध तथा उसे जीतना और इसके अलावा प्यार और आत्मा से जीतना बहुत अलग चीज है.

पाठ 18 में गांधी जी ने बताया है कि पाश्चिमी सभ्यता किस प्रकार से हमें एक शिक्षा देने में महत्व नहीं है क्योंकि पाश्चिमी सभ्यता हमें हमारी वैल्यू नहीं बताती.

और वह व्यक्तियों में गुण नहीं डालती गुणों का होना बहुत जरूरी है शिक्षा के अंदर.

सच्ची शिक्षा वह है जो हमारे अंदर चरित्र का निर्माण करें.

पाठ 19 में गांधी जी ने है बताया है कि मशीनों से किसी भी तरह से लेबर नहीं बदलनी चाहिए हमेशा हमें इंसानों से काम कराना चाहिए तथा मशीनों का इस्तेमाल हमें मुसीबत वह किसी बड़े दुविधा के समय करना चाहिए.

पाठ 20 में गांधीजी ने स्वराज को पाने के 20 तरीकों के बारे में बताया है.